




सलोकु ॥

उरि धारै जो अंतरि नामु ॥

सरब मै पेखै भगवानु ॥

निमख निमख ठाकुर नमसकारै ॥

नानक ओहु अपरसु सगल निसतारै ॥१॥





असटपदी ॥

मिथिआ नाही रसना परस ॥

मन महि प्रीति निरंजन दरस ॥

पर त्रिअ रूपु न पेखै नेत्र ॥

साध की टहल संतसंगि हेत ॥

करन न सुनै काहू की निंदा ॥

सभ ते जानै आपस कउ मंदा ॥


गुर प्रसादि बिखिआ परहरै ॥

मन की बासना मन ते टरै ॥


इंद्री जित पंच दोख ते रहत ॥


नानक कोटि मधे को ऐसा अपरस ॥१॥







बैसनो सो जिसु ऊपरि सुप्रसंन ॥
बिसन की माइआ ते होइ भिन ॥
करम करत होवै निहकरम ॥
तिसु बैसनो का निरमल धरम ॥
काहू फल की इछा नही बाछै ॥
केवल भगति कीरतन संगि राचै ॥
मन तन अंतरि सिमरन गोपाल ॥
सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥
आपि द्रिड़ै अवरह नामु जपावै ॥
नानक ओहु बैसनो परम गति पावै ॥२॥







भगउती भगवंत भगति का रंगु ॥
सगल तिआगै दुसट का संगु ॥
मन ते बिनसै सगला भरमु ॥
करि पूजै सगल पारब्रहमु ॥
साधसंगि पापा मलु खोवै ॥
तिसु भगउती की मति उत्तम होवै ॥
भगवंत की टहल करै नित नीति ॥
मनु तनु अरपै बिसन परीति ॥
हरि के चरन हिरदै बसावै ॥
नानक ऐसा भगउती भगवंत कउ पावै ॥३॥






सो पंडितु जो मनु परबोधै ॥
राम नामु आतम महि सोधै ॥
राम नाम सारु रसु पीवै ॥
उसु पंडित कै उपदेसि जगु जीवै ॥
हरि की कथा हिरदै बसावै ॥
सो पंडितु फिरि जोनि न आवै ॥
बेद पुरान सिम्रिति बूझै मूल ॥
सूखम महि जानै असथूलु ॥
चहु वरना कउ दे उपदेसु ॥
नानक उसु पंडित कउ सदा अदेसु ॥४॥





बीज मंत्रु सरब को गिआनु ॥
चहु वरना महि जपै कोऊ नामु ॥
जो जो जपै तिस की गति होइ ॥
साधसंगि पावै जनु कोइ ॥
करि किरपा अंतरि उर धारै ॥
पसु प्रेत मुघद पाथर कउ तारै ॥
सरब रोग का अउखदु नामु ॥
कलिआण रूप मंगल गुण गाम ॥
काहू जुगति कितै न पाईऐ धरमि ॥
नानक तिसु मिलै जिसु लिखिआ धुरि करमि



जिस कै मनि पारब्रह्म का निवासु ॥

तिस का नामु सति रामदासु ॥

आतम रामु तिसु नदरी आइआ ॥

दास दसंतण भाइ तिनि पाइआ ॥

सदा निकटि निकटि हरि जानु ॥

सो दासु दरगह परवानु ॥


अपुने दास कउ आपि किरपा करै ॥

तिसु दास कउ सभ सोझी परै ॥

सगल संगि आतम उदासु ॥

ऐसी जुगति नानक रामदासु ॥६॥





प्रभ की आगिआ आतम हितावै ॥

जीवन मुकति सोऊ कहावै ॥

तैसा हरखु तैसा उसु सोगु ॥

सदा अनंदु तह नही बिओगु ॥

तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी ॥


तैसा अम्रितु तैसी बिखु खाटी ॥


तैसा मानु तैसा अभिमानु ॥

तैसा रंकु तैसा राजानु ॥

जो वरताए साई जुगति ॥

नानक ओहु पुरखु कहीऐ जीवन मुकति ॥७॥





पारब्रह्म के सगले ठाउ ॥
जितु जितु घरि राखै तैसा तिन नाउ ॥
आपे करन करावन जोगु ॥
प्रभ भावै सोई फुनि होगु ॥
पसरिओ आपि होइ अनत तरंग ॥
लखे न जाहि पारब्रह्म के रंग ॥
जैसी मति देइ तैसा परगास ॥
पारब्रह्मु करता अबिनास ॥
सदा सदा सदा दइआल ॥
सिमरि सिमरि नानक भए निहाल ॥८॥९॥

